

# डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 25, अस्तित्ववाद

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह अस्तित्ववाद पर सत्र 25 है।

ठीक है, यह व्याख्यान संख्या 13 है। तो, अब हम जो देख रहे हैं वह डिट्रिच बोनहोफ़र से लेकर वर्तमान तक के धार्मिक विकास हैं। यह वास्तव में डिट्रिच बोनहोफ़र से लेकर वर्तमान तक नहीं है। यह सिर्फ़ एक आकर्षक शीर्षक है। तो बस इतना ही है।

तो, धार्मिक विकास, हम बस उस दुनिया में आने की कोशिश करने जा रहे हैं जिसमें हम रहते हैं। तो, इसमें मुझे दो दिन लगते हैं, आज और शुक्रवार, और मुझे उनमें से एक का उपयोग करने की आवश्यकता हो सकती है। हमारे पास एक क्लास का दिन बचा है। याद रखें, जब हम वापस आएंगे, तो हम डिट्रिच बोनहोफ़र के दो दिनों का एक वीडियो देखेंगे।

और फिर हमें शुक्रवार और बुधवार मिलेगा, और हम परीक्षा की तैयारी करेंगे। तो, हम ठीक रहेंगे। हम उस स्थिति में हैं जहाँ हमें होना चाहिए।

तो ठीक है, यहाँ डिट्रिच बोनहोफ़र से लेकर वर्तमान तक के धार्मिक विकास हैं। और हम अस्तित्ववाद से शुरुआत करने जा रहे हैं। ठीक है।

और आप देख सकते हैं कि हम अस्तित्ववाद के प्रतिनिधि, बुनियादी विशेषताएँ, ताकतें और आलोचनाएँ बनाने जा रहे हैं। तो हम यहीं हैं। मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर हूँ।

ठीक है, तो चलिए अस्तित्ववाद से शुरू करते हैं। खैर, दिलचस्प बात यह है कि अस्तित्ववाद एक ईसाई, एक आस्तिक के जीवन और मंत्रालय से शुरू होता है। और उसका नाम है सोरेन कीर्केगार्ड।

अब, निस्संदेह आपने अन्य पाठ्यक्रमों से कीर्केगार्ड को पढ़ा होगा, है न? आपने अन्य पाठ्यक्रमों में कीर्केगार्ड को पढ़ा होगा। तो आपने अन्य पाठ्यक्रमों में उनके बारे में बात की है। तो, सोरेन कीर्केगार्ड।

बहुत, बहुत रोचक। कीर्केगार्ड की तिथियों पर ध्यान दें। खैर, अब एक बात, अगर मैं यह कर सकता हूँ।

चलिए शुरू करते हैं। मैं इस गर्मी में डेनमार्क में दोस्तों से मिलने गया था। और हम डेनमार्क पहुँच गए।

और निश्चित रूप से, हम सोरेन कीर्केगार्ड के जन्म की 200वीं वर्षगांठ पर पहुँच गए हैं। और क्योंकि वह कोपेनहेगन से बहुत जुड़े हुए थे और उस जीवन और हर चीज का इतना बड़ा हिस्सा थे, यहाँ यह पुस्तक है, एक छोटी सी पुस्तक जो मैंने एक प्रदर्शनी में उठाई थी। कोपेनहेगन शहर भर में कीर्केगार्ड की बहुत सारी प्रदर्शनी हैं।

लेकिन इस छोटी सी किताब, गोल्डन एज कोपेनहेगन में कीर्केगार्ड, में एक संक्षिप्त और सचित्र परिचय है। और कीर्केगार्ड की 200वीं वर्षगांठ के दौरान कोपेनहेगन में होना बहुत ही दिलचस्प है। लेकिन यहाँ कीर्केगार्ड थे।

हम कीर्केगार्ड को ईसाई अस्तित्ववादी कहेंगे। ईसाई अस्तित्ववादी। तो एक अर्थ में अस्तित्ववाद की शुरुआत कीर्केगार्ड से हुई।

क्योंकि, एक ईसाई अस्तित्ववादी के रूप में, अस्तित्ववाद शब्द, आप जानते हैं, अस्तित्व, और इसी तरह के अन्य शब्दों से आता है। एक ईसाई अस्तित्ववादी के रूप में, कीर्केगार्ड जानता था कि मानवीय तर्क की सीमाएँ हैं। और याद रखें, वह इससे निपट रहा है। यहाँ वह 19वीं सदी के मध्य में रह रहा है।

और इसलिए मानवीय तर्क की सीमाएँ हैं। हृदय, भावना, व्यक्ति और पूरे व्यक्ति को मानवीय दुविधाओं और समस्याओं से निपटना पड़ता है। और इसलिए एक ईसाई जो अस्तित्ववादी है, वह ऐसा करने वालों में से एक है।

मानवीय तर्क की सीमाओं को पहचानना, मानवीय समस्याओं से निपटना, हमारे जीवन में मानवीय कारक, इत्यादि। अगर आपने कीर्केगार्ड के बारे में कुछ पढ़ा है, तो वह डर और कांपना हो सकता है। तो बस यही, किताब के शीर्षक में वे दो शब्द, डर और कांपना, आपको इस बात का अंदाजा देते हैं कि कीर्केगार्ड अपने निजी जीवन में किससे निपटने की कोशिश कर रहे थे।

हम अभी पेज 15 पर हैं, रूथ, और हम अभी धर्मशास्त्रीय विकास कर रहे हैं, आप जानते हैं, वर्तमान तक। और हम सोरेन कीर्केगार्ड से शुरुआत कर रहे हैं। तो कीर्केगार्ड, एक प्रतिनिधि के रूप में, मैंने कहा है कि यहाँ प्रतिनिधि होंगे।

और एक प्रतिनिधि के रूप में, मैंने उनके साथ शुरुआत की क्योंकि वह इस चीज़ को आगे बढ़ाने वाले और आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति थे। अब, बस एक मिनट के लिए इसे ऐतिहासिक रूप से समझने के लिए, कीर्केगार्ड एक ईसाई अस्तित्ववादी थे, लेकिन 20वीं सदी में आने वाला अस्तित्ववाद अपनी ईसाई जड़ों से अलग हो गया। इसलिए 20वीं सदी में आने वाला अस्तित्ववाद ज़रूरी नहीं कि ईसाई हो, जबकि कीर्केगार्ड खुद ईसाई थे।

तो, हम बस इस पर ध्यान देना चाहते हैं। ठीक है, तो यह उन व्यक्तित्वों के संदर्भ में एक व्यक्ति है जिन पर हम ध्यान देना चाहते हैं। प्रतिनिधियों के संदर्भ में, मुझे लगता है कि हम उन्हें वही नाम दे रहे हैं जिस पर हम ध्यान देना चाहते हैं।

ठीक है, दूसरा व्यक्ति रुडोल्फ बुल्टमैन नामक न्यू टेस्टामेंट विद्वान है। और क्या आप किसी अन्य पाठ्यक्रम में बुल्टमैन से मिले हैं? क्या आपने बुल्टमैन के बारे में बात की है? लेकिन रुडोल्फ बुल्टमैन के लिए, न्यू टेस्टामेंट विद्वान के रूप में उन्होंने जो किया वह अस्तित्ववादी व्याख्याशास्त्र के माध्यम से न्यू टेस्टामेंट को समझना था। इसलिए, वह न्यू टेस्टामेंट की व्याख्या अस्तित्ववादी तरीके से करने जा रहे हैं।

वह एक बहुत प्रसिद्ध और बहुत प्रभावशाली न्यू टेस्टामेंट विद्वान बन गए। लेकिन यहाँ बुल्टमैन का एक उदाहरण है। बुल्टमैन के लिए, पाप की परिभाषा एक अवास्तविक अस्तित्व थी।

तो, बुल्टमैन के लिए, पाप एक अवास्तविक अस्तित्व है। आप उस तरह का जीवन नहीं जी रहे हैं जैसा कि ईश्वर ने आपको जीने के लिए बनाया था। और यह पाप पर एक नया मोड़ है।

यह पाप की एक नई समझ है। यह पाप और अप्रामाणिक अस्तित्व को परिभाषित करने के लिए अस्तित्ववादी श्रेणियों का उपयोग कर रहा है। तो फिर, उसके लिए, मोक्ष एक मुक्ति प्राप्त अस्तित्व है।

तो, मोक्ष आपके अस्तित्व का ईश्वर द्वारा उद्धार होना है, उसे वैसा बनाया जाना है जैसा कि हमेशा से होना चाहिए था, और अप्रामाणिकता से दूर होकर एक उद्धार प्राप्त पूर्ण अस्तित्व को पाना है। तो अब, बुल्टमैन के बारे में आप एक बात क्या जानते हैं? अगर आप बुल्टमैन शब्द सुनते हैं, तो क्या कोई ऐसा शब्द है जिसे आप रुडोल्फ बुल्टमैन से जोड़ते हैं? खैर, वह शब्द डीमिथोलॉजाइजेशन हो सकता है, नए नियम से मिथक को हटाना। तो, उदाहरण के लिए, बुल्टमैन के लिए, पुनरुत्थान एक मिथक है।

यह एक महत्वपूर्ण मिथक है, लेकिन यह एक मिथक है। और इसलिए, बुल्टमैन के लिए, पुनरुत्थान कब्र से बाहर आने वाले शरीर के बारे में नहीं था, बल्कि यह यीशु के शिष्यों के जीवन में आने वाले ईस्टर विश्वास के बारे में था। तो फिर से, यह धर्मग्रंथ को देखने का एक अस्तित्ववादी तरीका है, नए नियम को देखना।

तो, यह यीशु के मृतकों में से जी उठने के बारे में नहीं है। यह हमारे जीवन में ईस्टर विश्वास प्राप्त करने और, इसलिए, उस तरह के मुक्तिप्राप्त अस्तित्व को जीने के बारे में है जिसे हमें जीना चाहिए। इसलिए, रुडोल्फ बुल्टमैन, जो करने जा रहे हैं, वह किर्केगार्ड जैसे लोगों की श्रेणियों को लेना और उन्हें नए नियम पर लागू करना है।

तो, वह दूसरे व्यक्ति होंगे जिनका हम उल्लेख करना चाहेंगे। और तीसरे व्यक्ति जिसका हम उल्लेख करना चाहते हैं, वह हैं पॉल टिलिच। पॉल टिलिच ने जो किया वह अस्तित्ववादी श्रेणियों को लेना और उन्हें धर्मशास्त्र पर लागू करना था।

इसलिए, जबकि बुल्टमैन ने उन्हें नए नियम के अध्ययन के लिए लागू किया, टिलिच ने उन्हें धर्मशास्त्र के लिए लागू किया। टिलिच का वास्तव में मानना था कि यदि धर्मशास्त्र वह है जिसे उन्होंने एक उद्धारक धर्मशास्त्र कहा है, तो उसे आधुनिक दुनिया में लोगों की स्थिति के बारे में बात करनी चाहिए। आप देख सकते हैं कि टिलिच कब रहते थे।

इसलिए, इसे आधुनिक दुनिया में लोगों की दुविधाओं के बारे में बात करनी चाहिए। अगर धर्मशास्त्र को एक उद्धारक धर्मशास्त्र बनना है, तो इसे आधुनिक दुनिया की समस्याओं के बारे में बात करनी चाहिए। इसलिए, टिलिच ने कहा कि जीवन में हम जिन बड़ी समस्याओं का सामना करते हैं, वे अर्थहीनता, या निराशा, या चिंता की समस्याएं हैं।

ये सभी समस्याएँ हमारे अस्तित्व और अस्तित्व पर सवाल उठाती हैं। और इसलिए, आप जिस तरह से अर्थहीनता, निराशा, चिंता, बहुत अस्तित्ववादी प्रकार की श्रेणियों से निपट सकते हैं, उससे निपटने का एकमात्र तरीका यह समझना है कि ईश्वर कौन है। और इसलिए, आप समझ जाएँगे कि आप कौन हैं।

तो मुझे नहीं पता कि आपने टिलिच को किसी दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम में पढ़ा है या नहीं, लेकिन उनके पास एक परिभाषा है जो यह समझने के लिए दिलचस्प है कि ईश्वर कौन है और ईश्वर हमारे अस्तित्व का आधार है। ईश्वर हमारे अस्तित्व का आधार है। क्योंकि टिलिच के लिए जीवन में जो चीज हमें खतरे में डालती है वह है अस्तित्व का न होना।

यही वह बात है जो हमें वास्तव में डराती है। लेकिन भगवान आते हैं, और वे हमारे अस्तित्व का आधार हैं। इसलिए, वे हमें, भगवान हमें तब एक प्रामाणिक अस्तित्व देते हैं।

ईश्वर हमारे अस्तित्व को प्रामाणिकता प्रदान करता है। इसलिए, टिलिच एक दिलचस्प व्यक्ति हैं। जैसे-जैसे टिलिच अपने जीवन में आगे बढ़े, वे केवल ईसाई धर्म के प्रति ही प्रतिबद्ध नहीं रहे।

वह एक ईसाई धर्मशास्त्री थे। मैंने वास्तव में टिलिच को तब सुना था जब मैं टेंपल यूनिवर्सिटी में था। वह बोलने के लिए टेंपल यूनिवर्सिटी आए थे, और इसलिए मैंने महान पॉल टिलिच को सुना।

इसलिए उन्हें बोलते हुए सुनना बहुत दिलचस्प था। लेकिन टिलिच, और आप यह तब भी बता सकते थे जब मैंने उन्हें सुना, टिलिच ने सभी धर्मों के संदर्भ में एक बदलाव किया जो टिलिच के लिए लगभग समान रूप से योग्य थे। वह अपने जीवन में ईसाई धर्म की विशिष्टता, ईश्वर में यीशु की विशिष्टता, इत्यादि को देखने में विफल रहे।

और इसलिए, वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए सभी धर्म एक ही सवालों का जवाब देते थे। हम सभी के पास एक ही सवाल हैं। पूरी मानवता के पास एक ही सवाल हैं, और सभी धर्म अपने-अपने तरीके से उनका जवाब दे सकते हैं।

तो यह पॉल टिलिच है। लेकिन वह धर्मशास्त्र की व्याख्या अस्तित्ववादी तरीके से करने जा रहा है। वह धर्मशास्त्र की व्याख्या करने के लिए अस्तित्ववादी श्रेणियों का उपयोग करने जा रहा है।

तो, यहाँ मैं जिन तीन पहले खिलाड़ियों का जिक्र करूँगा, वे हैं किर्केगार्ड, फिर न्यू टेस्टामेंट में बुल्टमैन और फिर धर्मशास्त्र में टिलिच। तो यह आपको वहाँ एक तरह का प्रतिनिधित्व देता है। मैं दूसरे नंबर पर आता हूँ, अस्तित्ववाद की कुछ बुनियादी विशेषताएँ और अस्तित्ववाद का आंदोलन।

फिर, हम कुछ खूबियाँ और कुछ आलोचनाएँ देंगे। ठीक है, अस्तित्ववाद की एक विशेषता, जैसा कि आप अस्तित्ववाद में चुटकले और सवाल से ही बता सकते हैं, लेकिन एक विशेषता है मानव की केंद्रीयता। यह एक तरह से बहुत ही मानव-केंद्रित आंदोलन है।

यह मूल रूप से किरैकगार्ड के साथ ऐसा नहीं था, लेकिन यह निश्चित रूप से ऐसा हो गया। और यह किस बारे में चिंतित है? यह आवश्यक रूप से ईश्वर की प्रकृति या उसमें आने वाली चीज़ों के बारे में चिंतित नहीं है, बल्कि यह मेरी अर्थहीनता और मेरी निराशा और मेरी चिंता आदि के बारे में चिंतित है। इसलिए, मनुष्य की केंद्रीयता बहुत ही व्यक्तिपरक और मानव-केंद्रित है।

दूसरा, अस्तित्ववाद की दूसरी विशेषता है जिसे मैं ईश्वर की अस्पष्टता कहता हूँ। अब, इस तरह से, यदि आप ईश्वर को अपने अस्तित्व का आधार कहने जा रहे हैं, तो क्या यह पुराने नियम या नए नियम के ईश्वर जैसा लगता है? यह मुझे नहीं लगता। यह पुराने नियम या नए नियम की भाषा नहीं है।

यह एक तरह की दार्शनिक भाषा है। इसलिए, कोई आश्चर्य नहीं कि अस्तित्ववादियों के पास एक अस्पष्ट ईश्वर था, एक ऐसा ईश्वर जिसे वे समझ नहीं पाए, एक ऐसा ईश्वर जिसे वे समझ नहीं पाए क्योंकि वे ईश्वर को हमारे अस्तित्व का आधार मानते थे। जब मैं ईश्वर के बारे में उनकी समझ के बारे में बात करता हूँ तो मुझे इसकी तुलना उदारवाद और नव-रूढ़िवाद से करना अच्छा लगता है।

उदारवाद में, ईश्वर आसन्न हो गया था। प्रोटेस्टेंट उदारवाद में, ईश्वर हमारे बीच में उतर आया। आप समाज की प्रक्रियाओं में, उदाहरण के लिए, और संस्कृति और उस में ईश्वर को देख सकते हैं।

लेकिन उदारवाद के लिए, ईश्वर हमारे पास आया। नव-रूढ़िवाद के लिए, ईश्वर हमसे ऊपर है। वे ईश्वर की श्रेष्ठता पर जोर देते हैं, ईश्वर की निकटता पर नहीं, बल्कि ईश्वर की श्रेष्ठता पर।

और वह पारलौकिक ईश्वर दुनिया पर न्याय लाता है। तो, यह एक दिलचस्प विरोधाभास है। अस्तित्ववाद में एक अस्पष्ट ईश्वर है।

उदारवाद ईश्वर की निकटता पर जोर देता है। और नव-रूढ़िवाद ईश्वर की श्रेष्ठता, ईश्वर की अन्यता पर जोर देता है। इसलिए, आपको ईश्वर के विभिन्न प्रकार के पहलू मिलते हैं।

मैं कहूंगा कि बाइबिल के अनुसार, ईश्वर का सबसे बाइबिलीय पहलू, निश्चित रूप से, रूढ़िवादी समझ है कि ईश्वर पारलौकिक है, पूरी तरह से अन्य के रूप में। हम समझते हैं कि पारलौकिकता, हालांकि, उस शब्द के यीशु मसीह के व्यक्तित्व में देह बनने के चेहरे में है। लेकिन मैं कहूंगा कि अस्तित्ववादियों के पास वास्तव में यह अस्पष्ट ईश्वर है।

ठीक है, नंबर तीन, अस्तित्ववाद की तीसरी तरह की विशेषता या विशेषता, वह होगी जिसे मैं चिंता की अनिवार्यता कहूंगा। जहाँ तक इस दुनिया में हमारे जीवन जीने के तरीके का सवाल है,

हम अनिवार्य रूप से चिंता की स्थिति में अपना जीवन जीते हैं। और अगर आपके पास एक ऐसा ईश्वर है जो अस्पष्ट है, जिसे आप नहीं जान सकते, जिसे आप समझ नहीं सकते, जिसे आप समझ नहीं सकते, तो शायद यही आपकी चिंता का कारण होगा।

और यह निश्चित रूप से हुआ। अंततः, अस्तित्ववादियों ने मूल रूप से ईश्वर की समस्या से पूरी तरह से छुटकारा पा लिया, और आधुनिक दुनिया में इस तरह की चिंता के साथ जीया। ठीक है, और अस्तित्ववाद की चौथी तरह की विशेषता यह है कि अस्तित्ववाद का लक्ष्य क्या है।

और अस्तित्ववाद का लक्ष्य प्रामाणिक अस्तित्व है। यही हम चाहते हैं।

लेकिन यहाँ एक विडंबना है क्योंकि कीर्केगार्ड जैसे बाइबिल के अस्तित्ववादी कहते हैं कि प्रामाणिक अस्तित्व केवल ईश्वर और मसीह आदि की आपकी समझ में ही आ सकता है। लेकिन जब आप ऐसे अस्तित्ववाद पर पहुँचते हैं जिसने ईश्वर को छोड़ दिया है, तो ऐसा लगता है कि आप एक चक्र में घूम रहे हैं। आप इस प्रामाणिक अस्तित्व को कैसे पाएँगे? खैर, आप नहीं पाएँगे।

मेरा मतलब है, यही समस्या है, है न? तो यह आपको चिंता और निराशा वगैरह की ओर ले जाता है। अब, मैं बस यही सोचता हूँ कि आज की दुनिया में, आज के विश्वविद्यालय जीवन में, हम उत्तर आधुनिकतावाद के बारे में बहुत बात करते हैं, और यही चलन में है, और यही अंतिम शब्द है और सब कुछ। हालाँकि, जब मैं विश्वविद्यालय गया, तो अस्तित्ववाद पर बहुत चर्चा और चर्चा होती थी, वगैरह।

और हम काफ़का, फ्रांज काफ़का जैसे लोगों को पढ़ रहे थे। और मुझे नहीं पता कि आप लोगों में से किसी ने फ्रांज काफ़का को पढ़ा है या नहीं। यह पढ़ना बहुत दिलचस्प है।

इसे पढ़ते समय आप थोड़े उदास हो जाएँगे क्योंकि यह अस्तित्ववादी साहित्य है। या क्या आपने सार्त्र को पढ़ा है? अगर आपने सार्त्र को पढ़ा है या सार्त्र के कुछ नाटक देखे हैं। तो, मेरे विश्वविद्यालय के दिनों में, हम इन लोगों को पढ़ते थे।

मेरा मतलब है, यह एक तरह से सामान्य कोर का हिस्सा था, इन अस्तित्ववादियों को पढ़ना। इसलिए, मैं एक तरह से इसी के साथ बड़ा हुआ हूँ। फिर भी, एक ईसाई के रूप में, मुझे लगा कि मैं इस सब के बारे में कुछ कह सकता हूँ।

लेकिन ये अस्तित्ववाद की कुछ बुनियादी विशेषताएँ हैं। अब, पहली विशेषता है मानव की केंद्रीयता। यह अत्यधिक मानव-केंद्रित है।

यह मेरे बारे में है, मेरी निराशा, मेरी चिंता, मेरे अर्थहीन जीवन के बारे में है। यह सब मेरे बारे में है। इसलिए अस्तित्ववाद में इस तरह का मानव-केंद्रित स्वाद था।

कीर्केगार्ड के साथ नहीं, बल्कि कीर्केगार्ड का अनुसरण करने वाले लोगों के साथ। अस्तित्ववाद की कुछ खूबियाँ हैं। और मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करना चाहूँगा।

मैंने खुद अस्तित्ववाद से सीखा है। मुझे किरकेगार्ड पढ़ना बहुत पसंद है। लेकिन मैं काफ़का और सार्त्र जैसे लोगों को भी पढ़ता हूँ।

इससे कुछ सीखा जा सकता है। इसलिए मैं कुछ ऐसी बातें बताना चाहता हूँ जो सीखी जा सकती हैं। लेकिन साथ ही कुछ बुनियादी आलोचनाएँ भी करना चाहता हूँ।

ठीक है। एक बात जो सीखी जा सकती है वह यह है कि सत्य का अनुभव बाहरी रूप से होता है, यह वस्तुनिष्ठ होता है, लेकिन अस्तित्ववादी हमें याद दिलाते हैं कि सत्य का अनुभव आंतरिक रूप से भी होता है। आपका अपना अनुभव, आपका अपना दिल, आपकी अपनी आंतरिक भावना भी आपको सत्य को समझने में मदद कर सकती है।

आप अपने अंदर झाँककर सच्चाई सीखते हैं। अस्तित्ववाद ने हमें यही सिखाया है। मुझे लगता है कि यह अस्तित्ववाद का सबक है।

मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि जब आप धर्मशास्त्र पढ़ाते हैं, तो हम सत्य को बाह्य रूप से देखना चाहते हैं, जो वस्तुनिष्ठ है, और आंतरिक और व्यक्तिपरक भी है। हम एक या दूसरे को नहीं चाहते हैं, बल्कि हम दोनों को चाहते हैं। अस्तित्ववाद की ताकत यह है कि यह इस बात पर जोर देता है कि सत्य एक आंतरिक अनुभव है।

ठीक है। मुझे लगता है कि दूसरी ताकत जो मैंने लिखी है, वह यह मान्यता है कि लोग अद्वितीय हैं, कि लोग एक तरह से अद्वितीय हैं, और उन्हें किसी तरह के वस्तुनिष्ठ स्तर पर नहीं लाया जा सकता है। आप लोगों को किसी तरह के वस्तुनिष्ठ स्तर पर नहीं ला सकते हैं जहाँ आप उनका वस्तुनिष्ठ रूप से विश्लेषण कर सकें जैसे कि उनमें इस तरह की विशिष्टता नहीं है।

आप शायद मार्टिन बुबर के अन्य पाठ्यक्रमों से परिचित होंगे, और मार्टिन बुबर ने मैं-यह संबंध के बीच के संबंध में अंतर के बारे में बात की थी। यदि आपका ईश्वर या लोगों के साथ मैं-यह संबंध है, तो आपने उन लोगों को वस्तु बना दिया है। और ईश्वर या लोगों के साथ मैं-यह संबंध के बजाय, संबंध एक मैं-क्या, एक मैं-तू संबंध होना चाहिए।

ईश्वर और अपने साथी मनुष्यों के साथ आपका रिश्ता एक मैं-तू रिश्ता होना चाहिए। और एक मैं-तू रिश्ते में, यह दर्शाता है कि आपने इन लोगों को वस्तु नहीं बनाया है, लेकिन आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से लेते हैं, आप उन्हें गंभीरता से लेते हैं, और इसी तरह। तो, मार्टिन बुबर आते हैं, और वे, निश्चित रूप से, इस समय के दौरान रहते थे, लेकिन मार्टिन बुबर आते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि हमें लोगों को वस्तु नहीं बनाना चाहिए, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मुझे लगता है कि अस्तित्ववाद से तीसरी चीज़ जो मददगार है, वह यह है कि हम सीख सकते हैं कि हमें ईमानदार होना चाहिए। हमारी दुनिया में बहुत से लोगों को ईश्वर पर विश्वास करना मुश्किल लगता है, ईश्वर पर विश्वास करना मुश्किल लगता है, और ईश्वर पर विश्वास करना असंभव भी लगता है। इस बारे में कोई संदेह नहीं है।

और जब वे चर्च को देखते हैं, तो वे चर्च में ऐसे लोगों को देखते हैं जो पूजा कर रहे हैं, उद्धरण-उद्धरण, लेकिन वे केवल आदत के कारण पूजा कर रहे हैं। उनके पास हमें ईश्वर के बारे में सिखाने के लिए बहुत कुछ नहीं है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो मैंने अस्तित्ववाद से सीखा है, कि बहुत से लोगों के लिए ईश्वर में विश्वास करना मुश्किल है।

यह कठिन है। यह आसान नहीं है। और मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि यह शायद एक तरह की ताकत है।

चौथी बात जो हम अस्तित्ववाद से सीख सकते हैं, वह है जीवन की समस्याओं का सामना करने की इच्छा। आगे बढ़ो, आशा। यह मान्यता कि लोगों को ईश्वर पर विश्वास करना कठिन लगता है।

हाँ, वह अस्तित्ववाद था। एक बात जो इसने हमें सिखाई है वह यह है कि बहुत से लोगों को ईश्वर पर विश्वास करना वाकई बहुत मुश्किल लगता है। और जब वे चर्च में लोगों को देखते हैं, अगर वे बाहरी लोग हैं और चर्च में लोगों को देखते हैं, तो वे चर्च में लोगों को देखते हैं, और वे कहते हैं कि लोग केवल आदत से पूजा कर रहे हैं।

उनमें ईश्वर के प्रति कोई गहरी आस्था या विश्वास या ईश्वर के बारे में कोई समझ नहीं है। वे आदतन ऐसा कर रहे हैं, और मैं इसका हिस्सा नहीं बनना चाहता। इसलिए लोगों को ईश्वर पर विश्वास करना मुश्किल लगता है, और हमें इससे हैरान नहीं होना चाहिए।

ईसाई होने के नाते, हमें उस वास्तविकता का सामना करना चाहिए। क्या इससे मदद मिलती है? और फिर एक और बात है मृत्यु का सामना करने की सच्ची इच्छा। अस्तित्ववाद में, मृत्यु एक वास्तविकता है।

यह ऐसी चीज़ है जिससे हम सभी को निपटना होगा। अगर मसीह वापस नहीं आएगा, तो हम सभी मर जाएँगे। हममें से कोई भी इस दुनिया से ज़िंदा नहीं निकल पाएगा।

मुझे तुम्हें यह बताने में नफरत है, हन्नाह—वाह, थैंक्सगिविंग और क्रिसमस और बाकी सब से ठीक पहले। लेकिन अगर मसीह वापस नहीं आता है, तो हममें से कोई भी इस दुनिया से ज़िंदा नहीं निकल पाएगा।

शायद हम इस बारे में सोचना नहीं चाहते। अस्तित्ववादियों ने इस बारे में बहुत सोचा। यह एक तरह की ऐसी चीज़ थी जिसने उनकी अर्थहीनता, निराशा और चिंता वगैरह को बढ़ावा दिया।

अब, ईसाई होने के नाते, हम इसका उत्तर पुनरुत्थान के सिद्धांत के माध्यम से देते हैं, बेशक, और मसीह का पुनरुत्थान और हमारा पुनरुत्थान। लेकिन फिर भी, वे मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार हैं। यह कुछ ऐसा है जिससे लोगों को निपटना ही होगा।

और फिर, अंत में, मैं अस्तित्ववाद में जो ताकत देखता हूँ, वह यह मान्यता है कि बहुत से लोग उथला, खोखला और अर्थहीन जीवन जीते हैं। यह जीवन की मानवीय वास्तविकता की मान्यता मात्र है। अस्तित्ववाद हमें याद दिलाता है कि बहुत से लोग बहुत प्रामाणिक जीवन नहीं जी रहे हैं।

और अस्तित्ववाद इसकी याद दिलाता है। तो, अस्तित्ववाद में कुछ खूबियाँ थीं, लेकिन कुछ आलोचनाएँ भी थीं, नंबर चार। तो, मैं आंदोलन की आलोचनाओं का उल्लेख करना चाहता हूँ।

मुझे लगता है कि पहला जो हमने पहले ही उल्लेख किया है, वह यह है कि, अंततः, किर्केगार्ड के बाद जो अस्तित्ववाद विकसित हुआ वह मानवतावाद का एक रूप था। इसका संबंध अस्तित्ववाद के मानव-केंद्रित दृष्टिकोण से है। लेकिन हमें ईश्वर को केंद्र में रखने वाले धर्मशास्त्र की आवश्यकता है, मसीह में ईश्वर को केंद्र में रखना चाहिए, जिसकी सेवा पवित्र आत्मा द्वारा की जाती है।

हमें किसी धर्मशास्त्र की ज़रूरत नहीं है जिसका केंद्र हम हों। हम कहानी का केंद्र नहीं हैं। कहानी का केंद्र ईश्वर है।

और मुझे लगता है कि अस्तित्ववाद ने इसे भूला दिया है। इसलिए मैं अस्तित्ववाद पर यही आलोचना लाऊंगा। दूसरी बात, अस्तित्ववाद अक्सर लोगों की वास्तविक प्रकृति को समझने में विफल रहता है।

क्योंकि अस्तित्ववाद लोगों को अलग-अलग नज़रिए से देखता है। यह लोगों को देखता है, और आप अर्थहीनता और निराशा और चिंता और हर चीज़ की इन सभी समस्याओं में पड़ जाते हैं। यह लोगों को हमारे नज़रिए से देखता है।

बल्कि, सवाल यह नहीं है कि हम अपने नज़रिए से कौन हैं, बल्कि यह है कि हम ईश्वर के नज़रिए से कौन हैं। हम अपने निर्माता के नज़रिए से कौन हैं? और मुझे लगता है कि अस्तित्ववाद ने इसे भूला दिया है। इसलिए, आप हमसे शुरुआत नहीं करते; आप ईश्वर से शुरुआत करते हैं, और फिर आप खुद को समझते हैं और इसी तरह आगे बढ़ते हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि यह दूसरी बात है जो समस्याग्रस्त है। तीसरी समस्या यह है कि अस्तित्ववाद पाप के बारे में बात नहीं करता। यह मूल पाप से कोई लेना-देना नहीं रखना चाहता, जो मुझे लगता है कि बाइबिल का सिद्धांत है।

इसका लोगों के ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह के वास्तविक पाप आदि से कोई लेना-देना नहीं है। और इसलिए, इसलिए, अस्तित्ववाद, वे बार्थ के अनुग्रह की विजय के सिद्धांत को नहीं समझ पाए। क्योंकि अगर आपके पास पाप का कोई मजबूत सिद्धांत नहीं है, तो आपके पास अनुग्रह का कोई मजबूत सिद्धांत भी नहीं होगा।

जब आप पाप की प्रकृति को समझ लेते हैं, तभी आप ईश्वर की कृपा की प्रकृति को समझ सकते हैं। इसलिए, यह अस्तित्ववाद के लिए समस्याजनक हो जाता है। और फिर, अंत में, बाइबल के बारे में उनका दृष्टिकोण है।

हम बुल्टमैन से शुरू करेंगे और कहेंगे कि हमें नहीं लगता कि बाइबल को मिथक से मुक्त करने की ज़रूरत है। इसलिए, हम उनके व्याख्याशास्त्र से शुरू करेंगे। लेकिन फिर हम कहेंगे कि बहुत से अस्तित्ववादी बाइबल को अनदेखा करते हैं।

उन्हें लगता है कि बाइबल किसी भी तरह से उनकी मदद नहीं कर सकती। इसलिए, बाइबल को जीवन के केंद्र के रूप में देखने के बजाय, वे बाइबल को जीवन के हाशिये पर देखते हैं। और विडंबना यह है कि इससे उन्हें और भी निराशा होती है क्योंकि वे जीवन के सवाल का जवाब अपने आप से, अपनी दुनिया से, और इसी तरह से देने की कोशिश कर रहे हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि बाइबल के बारे में उनका दृष्टिकोण समस्याग्रस्त है। ठीक है, तो अस्तित्ववाद और यहाँ के कुछ लोगों ने हमें इसे समझने में मदद की है। कीर्केगार्ड का दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

अगर आप इनमें से किसी भी व्यक्ति की कोई भी रचना पढ़ने जा रहे हैं, तो मैं कीर्केगार्ड से शुरुआत करूँगा क्योंकि वह इस पर चर्चा करता है, लेकिन ईसाई संदर्भ में। ठीक है, क्या कोई अस्तित्ववादी है? अस्तित्ववाद के बारे में बात करना चाहते हैं? क्या आप काफ़का और सार्त्र और ऐसी ही अन्य अच्छी चीज़ें पढ़ रहे हैं? या मुझे कहना चाहिए कि वे सभी दिलचस्प चीज़ें हैं। ठीक है, नंबर दो है सार्वभौमिकतावाद।

विश्वव्यापीकरण। सबसे पहले, विश्वव्यापीकरण के साथ हम जो करने जा रहे हैं, उसका संबंध चर्च की एकता से है। ठीक है, तो विश्वव्यापीकरण आंदोलन या विश्वव्यापीकरण।

मैं सबसे पहले उन कारणों पर नज़र डालने जा रहा हूँ कि क्यों प्रोटेस्टेंटवाद विभाजित था और फिर प्रोटेस्टेंटवाद की बढ़ती मान्यता और कैसे प्रोटेस्टेंटवाद इस सार्वभौमिकता के संदर्भ में संस्थागत हो गया। आप में से जिन्होंने एक पेपर सुना है, अब मुझे ठीक से याद नहीं है कि वह कौन सा था, लेकिन वैसे भी, एक पेपर प्रोटेस्टेंट समय के दौरान सार्वभौमिकता से संबंधित था। यह आखिरी पेपर था, हाँ, आखिरी पेपर पूरे सार्वभौमिक आंदोलन से संबंधित था।

वह बहुत ही ज्यादा था; वक्ता बहुत ज्यादा एक्यूमेनिज्म, एक्यूमेनिकल आंदोलन और इसी तरह के अन्य विषयों में शामिल था। ठीक है, तो सबसे पहले, एक्यूमेनिज्म के साथ, और एक्यूमेनिज्म का सबसे पहले प्रोटेस्टेंटिज्म से संबंध है। यह फिर कैथोलिक धर्म और रूढ़िवादी तक पहुंचने वाला है, लेकिन एक्यूमेनिकल आंदोलन एक विभाजित प्रोटेस्टेंट के साथ शुरू हुआ जो खुद को समझने की कोशिश कर रहा था।

ठीक है, प्रोटेस्टेंटवाद के विभाजित होने के क्या कारण हैं? मेरे पास चार कारण हैं कि क्यों 20वीं सदी की शुरुआत में प्रोटेस्टेंटवाद विभाजित हो गया। ठीक है, पहला कारण धार्मिक है। धार्मिक दृष्टि से, प्रोटेस्टेंटवाद धार्मिक, धार्मिक विभाजन, धार्मिक विभाजन के कारण विभाजित था।

कुछ प्रोटेस्टेंट इस पर विश्वास करते थे; कुछ प्रोटेस्टेंट उस पर विश्वास करते थे, और इसी तरह। हमने पाया कि 20वीं सदी के मध्य से शुरू होकर, ये धार्मिक बातें जिनके बारे में हम बात करते

हैं, हमें विभाजित कर रही हैं, और यह समस्याजनक होता जा रहा है। और हम कहेंगे कि कुछ धार्मिक विभाजन अन्य धार्मिक विभाजनों की तुलना में अधिक छोटे थे।

तो, प्रोटेस्टेंटवाद के विभाजन का पहला कारण धार्मिक था, और इस बारे में कोई संदेह नहीं है। दूसरा कारण सामाजिक है। प्रोटेस्टेंटवाद के विभाजन का दूसरा कारण वह था जिसे हम सामाजिक विभाजन कहते हैं जो राष्ट्रवाद से लेकर, एक तरह के राष्ट्रीय चर्च से लेकर राष्ट्रीय प्रोटेस्टेंट चर्च तक, जैसे इंग्लैंड में एंग्लिकन चर्च, या कुछ नैतिक मुद्दों पर सामाजिक विभाजन हो सकता है।

और इसलिए, 19वीं सदी के मध्य में गुलामी के मुद्दे पर इस देश में प्रोटेस्टेंटवाद गंभीर रूप से विभाजित था। इसलिए, बहुत सारे सामाजिक मुद्दे हो सकते हैं, बहुत सारे सामाजिक मुद्दे थे जो प्रोटेस्टेंटवाद को विभाजित करते थे। गुलामी का मुद्दा हमारे देश में एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि कुछ प्रोटेस्टेंट गुलामी के पक्ष में थे, और कुछ प्रोटेस्टेंट गुलामी के विरोधी थे।

तो इससे बहुत बड़ा विभाजन हुआ। ठीक है, नंबर तीन, विभाजन का तीसरा कारण आर्थिक है। अमीर प्रोटेस्टेंट हैं और गरीब प्रोटेस्टेंट हैं।

और अमीर और गरीब के बीच का यह विभाजन, निश्चित रूप से प्रोटेस्टेंटों ने खुद से कहना शुरू कर दिया, एक मिनट रुको, यह हमें विभाजित कर रहा है। हमें एक साथ आने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन हम नहीं हैं। और हम क्यों नहीं हैं? खैर, इसका एक हिस्सा आर्थिक था।

ठीक है, और फिर अंत में, विभाजित प्रोटेस्टेंटवाद का एक कारण व्यक्तिवाद था - मुझ पर जोर, जो 20वीं सदी में आता है। आप जानते हैं, मेरे बारे में बहुत हो गया, अब मेरे बारे में बात करते हैं।

उस व्यक्तिवाद और निजीकरण के साथ, और यह सिर्फ प्रोटेस्टेंट ही नहीं था, बल्कि पश्चिमी दुनिया में निजीकरण ने प्रोटेस्टेंटवाद में विभाजन पैदा कर दिया। और प्रोटेस्टेंटवाद ने खुद को बहुत विभाजित पाया और फैसला किया कि हमें इस बारे में कुछ करने की ज़रूरत है। हम इस बारे में क्या कर सकते हैं? हम किस तरह से एक साथ आ सकते हैं? ठीक है, तो चलिए अब पता लगाते हैं कि प्रोटेस्टेंट ने इस आंदोलन में खुद को कैसे एकजुट करने की कोशिश की जिसे इक्यूमेनिकल मूवमेंट कहा जाता है।

उन्होंने ऐसा करने की कोशिश कैसे की? उन्होंने एक साथ आने की कोशिश कैसे की? भगवान आपका भला करे। भगवान आपका भला करे। तो, ठीक है, प्रोटेस्टेंट ने जो पहली बात कहना शुरू की, और मेरा इरादा अपनी बाइबल निकालने का था, और मैंने ऐसा नहीं किया, लेकिन कृपया इसे लिख लें, इफिसियन 4, 4 से 6। इफिसियन 4, 4 से 6। प्रोटेस्टेंट ने एक साथ मिलते ही जो पहली बात कहना शुरू किया, उन्होंने कहना शुरू किया, एक मिनट रुकिए, इफिसियन 4, 4 से 6 एकता का आह्वान करते हैं।

20वीं सदी की शुरुआत में विविधता वाले बहुत से प्रोटेस्टेंटों के साथ जो हुआ, वह यह है कि यीशु मसीह पर केंद्रित एकता होनी चाहिए। हमारे बीच जो भी दरारें हैं, जो भी समस्याएँ हैं, जो भी विभाजन हैं, हमें इफिसियों 4, 4 से 6 के प्रकाश में और यीशु मसीह पर केंद्रित एकता के बारे में

पुनर्विचार करना होगा। इसलिए, मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि सार्वभौमिक आंदोलन प्रोटेस्टेंटों के बीच एक धार्मिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ।

इसकी शुरुआत प्रोटेस्टेंटों द्वारा धर्मशास्त्रीय रूप से सोचना शुरू करने से हुई। अब, यह विविधता का खंडन नहीं था। यह इस बात का खंडन नहीं था कि शायद प्रोटेस्टेंटों के भीतर भी संप्रदायों का होना ठीक है।

लेकिन यह कह रहा था कि किसी तरह की एकता होनी चाहिए जो हमसे बड़ी किसी चीज़ पर आधारित हो और उन्होंने इफिसियों 4:4 से 6 में वह एकता पाई। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि विश्वव्यापी आंदोलन उस धार्मिक दृष्टि को बनाए रखने में सक्षम था, लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि आंदोलन की शुरुआत में, यह धर्मशास्त्र ही था जिसने प्रोटेस्टेंटों को एक साथ लाया। तो इस तरह से यह सब शुरू हुआ। ठीक है, फिर एक और बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए, एकता की इस बढ़ती मान्यता के संदर्भ में, एकता की आवश्यकता, यह काफी हद तक मिशनरियों से, मिशनरियों द्वारा शुरू हुई।

चूँकि मिशनरी 19वीं सदी में क्षेत्र में काम कर रहे थे, इसलिए उन्हें एहसास हुआ कि शायद हम ईसाई बनने से ज़्यादा बैपटिस्ट बनाने में रुचि रखते हैं। शायद हम ईसाई बनने से ज़्यादा प्रेस्बिटेरियन बनाने में रुचि रखते हैं। शायद हम ईसाई बनने से ज़्यादा कॉन्ग्रेगेशनलिस्ट बनाने में रुचि रखते हैं।

मिशनरी विवेक ने विश्वव्यापी आंदोलन को आगे बढ़ाने में मदद की, और हम कहते हैं कि हमारी पहली प्राथमिकता लोगों को मसीह के पास लाना है। यह सब संप्रदायिक रूप से कैसे काम करता है यह एक और मामला है। इसलिए, उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने 1910 में एडिनबर्ग में विश्व मिशनरी सम्मेलन नामक एक महान सम्मेलन आयोजित किया।

इसलिए, विश्व मिशनरी सम्मेलन, एडिनबर्ग सम्मेलन, 1910, इनमें से बहुत से लोगों को एक साथ लाया, और उस सम्मेलन का नेता 20वीं सदी के मिशनरी आंदोलन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति था। उसका नाम जॉन मॉट था। अब, जॉन मॉट एडिनबर्ग में इस विश्व मिशनरी सम्मेलन का नेता बनने में विशेष रूप से रुचि रखते थे क्योंकि वह विशेष रूप से दिलचस्प थे क्योंकि वह एक आम व्यक्ति थे।

वह एक मेथोडिस्ट आम आदमी था। वह कोई उपदेशक नहीं था। वह कोई नियुक्त पादरी या कुछ और नहीं था।

और वह खुद मिशनरी नहीं थे। उन्होंने मिशनों का समर्थन किया, लेकिन वह खुद मिशनरी नहीं थे। जॉन मॉट को 1910 में एडिनबर्ग में पहले विश्व मिशनरी सम्मेलन का प्रभारी बनाया गया था।

हमारे पास गॉर्डन कॉलेज में एक प्रोफेसर थे, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, एक इतिहास के प्रोफेसर, प्रोफेसर एस्क्यू, जिन्होंने इस विश्व मिशनरी सम्मेलन पर बहुत शोध किया था और इसे वास्तव में अच्छी तरह से जानते थे। और इसलिए, जॉन मॉट इन लोगों को एक साथ लाते हैं, और वे इस सम्मेलन की अध्यक्षता करते हैं, और इन लोगों को एहसास होता है कि प्रोटेस्टेंटवाद एक

तरह से संकट में है, और हमें इसे ठीक करना होगा। और इसलिए इस तरह के मिशनरी आंदोलन से यह मिशनरी सम्मेलन आता है, और फिर यह वहीं से आगे बढ़ता है।

बढ़ती मान्यता के संदर्भ में एक और बात यह है कि हमें एकता की आवश्यकता है, और ऐसा दुनिया में सामाजिक समस्याओं और दुनिया में बढ़ती धर्मनिरपेक्षता के कारण है, जो प्रोटेस्टेंटों से कह रहा है कि हमें इन समस्याओं का सामना करने के लिए एक साथ एकजुट होने की आवश्यकता है। हम सामाजिक समस्याओं का सामना करने में सक्षम होंगे, और हम एक आंदोलन के रूप में, लोगों के एक समूह के रूप में, और मसीह के शरीर के रूप में धर्मनिरपेक्षता का बेहतर सामना करने में सक्षम होंगे, जितना कि हम इन समस्याओं का सामना अपने स्वयं के संप्रदायों या अपने स्वयं के समूहों के भीतर व्यक्तिगत रूप से करने की कोशिश करेंगे। इसने उन्हें संस्कृति, दुनिया, सामाजिक समस्याओं और धर्मनिरपेक्षता का सामना करने के लिए एक साथ लाया। आइए इसे एक स्वर के साथ करें, यदि संभव हो, और वहां से आगे बढ़ें।

और इसलिए यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। ठीक है, और फिर एक अंतिम बात, आवश्यकता की बढ़ती मान्यता, और वह द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव था, क्योंकि विश्वव्यापी आंदोलन वास्तव में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संस्थागत रूप से अस्तित्व में आया। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में दुनिया भर के ईसाइयों ने जो कुछ झेला वह अत्याचार था, और डिट्रिच बोनहोफ़र ने इसका सामना किया, और हम बाद में इसका उल्लेख करेंगे, विशेष रूप से डिट्रिच बोनहोफ़र ने इन अत्याचारों का सामना किया।

और सवाल यह है कि नाज़ियों के अत्याचार, हिटलर के अत्याचार, क्या आप उसका अकेले सामना करना चाहते हैं, या प्रोटेस्टेंटवाद के लिए दुनिया के अत्याचारों के खिलाफ़ एकजुट आवाज़ उठाना सबसे अच्छा है? तो, द्वितीय विश्व युद्ध और उसके बाद के दौर ने इस आंदोलन पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला, जिसे आगे चलकर विश्वव्यापी आंदोलन कहा जाएगा। इस बारे में कोई संदेह नहीं है। अब, मैं सिर्फ़ इस सब के संस्थागतकरण का ज़िक्र करना चाहता हूँ। आखिरकार यह सब संस्थागत कैसे हुआ? इस पाठ्यक्रम में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख़ है, और वह है 1948।

ठीक है, 1948 में, वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चिस नामक एक समूह का गठन किया गया था। 1948, वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चिस। यह शुरू से ही प्रोटेस्टेंट था।

ऐसा नहीं है कि उन्होंने कैथोलिकों या रूढ़िवादी लोगों का स्वागत नहीं किया, लेकिन वे पहले अपना घर ठीक करना चाहते थे। इसलिए, 1948 में एम्स्टर्डम में प्रोटेस्टेंट समूह के रूप में विश्व चर्च परिषद का गठन किया गया। हुआ यह कि इस पूरी चीज़ को संस्थागत बनाने के लिए, 1950 में, नेशनल काउंसिल ऑफ़ चर्चिस का गठन शुरू हुआ।

और सबसे पहले यहाँ अमेरिका में गठित की गई थी, नेशनल काउंसिल ऑफ़ चर्चिस। 1950 में गठित। अब, हम कहेंगे कि वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चिस और नेशनल काउंसिल ऑफ़ चर्चिस का गठन बहुत अच्छे धार्मिक इरादों के साथ किया गया था, जब उनका गठन किया गया था और जब उनका जन्म हुआ था।

और वे बाइबिल से संबंधित थे, वे केंद्रीय थे, वे बाइबिल से संबंधित थे, और उनका गठन बाइबिल और धर्मशास्त्रीय था, मैं कहूंगा। मैं बस एक मिनट में एक व्यक्तिगत अनुभव देने जा रहा हूँ, लेकिन अब विश्व चर्च परिषद और राष्ट्रीय चर्च परिषद के साथ मूल समस्या यह है कि वे अपनी बाइबिल संबंधी निष्ठाओं को भूल गए हैं। विश्व चर्च परिषद और राष्ट्रीय चर्च परिषद अब बहुत स्पष्ट बाइबिल प्राधिकरण से काम नहीं करते हैं।

यह कहना दुखद है। और इसने, एक अर्थ में, अन्य समूहों के गठन का कारण बना है जो अधिक बाइबिल-केंद्रित हैं। लेकिन आज विश्वव्यापी आंदोलन वह नहीं है जो इसका उद्देश्य था, वह वह नहीं है जो यह स्थापित होने पर था।

मेरे अपने जीवन से एक छोटा सा उदाहरण। 1960 में मैं अभी भी हाई स्कूल में था। मैंने 1961 तक कॉलेज में प्रवेश नहीं लिया था।

और मुझे एक दिन एक फ़ोन आया, और उसमें कहा गया, क्या आप एन आर्बर, मिशिगन में उत्तरी अमेरिकी विश्वव्यापी युवा सभा में अपने संप्रदाय का प्रतिनिधि बनना चाहते हैं? खैर, सबसे पहले, मुझे नहीं पता था कि विश्वव्यापी शब्द का क्या अर्थ है, इसलिए मुझे जाकर यह पता लगाना पड़ा - एन आर्बर, मिशिगन में उत्तरी अमेरिकी विश्वव्यापी युवा सभा। और इसलिए, मैं गया और पता लगाया कि विश्वव्यापी का क्या अर्थ है और इसी तरह की अन्य बातें।

मैंने सोचा कि एन आर्बर, मिशिगन की यात्रा की जाए। मैं हाई स्कूल में सीनियर था। यह बहुत अच्छा रहेगा।

तो, मैंने हाँ कर दी। तो मैं चल पड़ा। मैंने अपना बैग पैक किया, और हम लगभग एक हफ़्ते तक मिशिगन के एन आर्बर में रहे।

खैर, मुझे कहना होगा कि यह एक बहुत ही रोचक अनुभव था क्योंकि यह एक... उस समय तक, विश्वव्यापी आंदोलन कैथोलिकों को शामिल करने के लिए व्यापक हो गया था, इसमें रूढ़िवादी शामिल थे, और इसी तरह। लेकिन एक बच्चे के रूप में जो मेरे संप्रदाय में बड़ा हुआ, वह लगभग एकमात्र संप्रदाय था जिसे मैं जानता था। यह आप लोगों के लिए सच नहीं हो सकता है।

हो सकता है कि आप कई अलग-अलग संप्रदायों के साथ बड़े हुए हों, और हो सकता है कि आपके पास मेरे समय की तुलना में एक व्यापक दृष्टिकोण हो। लेकिन एक बच्चे के रूप में अपने ही संप्रदाय में बड़े होने के कारण, उनसे मिलना दिलचस्प था... मैं क्या जानता था? वहाँ कैथोलिक, प्रेस्बिटेरियन, मेथोडिस्ट, रोमन कैथोलिक और पूर्वी रूढ़िवादी लोग थे। मैंने इनमें से ज्यादातर लोगों के बारे में कभी नहीं सुना था।

यह एक तरह का आकर्षक अनुभव था। और मुझे कहना होगा कि उत्तरी अमेरिकी विश्वव्यापी युवा सभा, इस तथ्य के बावजूद कि 1960 तक विश्वव्यापी आंदोलन कुछ हद तक कमज़ोर पड़ चुका था। लेकिन मुझे कहना होगा कि मैं कुछ बेहतरीन उपदेशों, कुछ बाइबिल संबंधी उपदेशों, वास्तव में अद्भुत उपदेशों आदि को सुनकर बहुत प्रेरित हुआ।

हमारे पास बाइबल अध्ययन थे। यह सिर्फ़ इतना था कि हमारे पास बाइबल अध्ययन नहीं था, सिर्फ़ हमारा अपना छोटा सा समूह था। लेकिन बाइबल अध्ययन में बैप्टिस्ट और प्रेस्बिटेरियन और कांग्रेगेशनलिस्ट वगैरह होते थे, जो मुझे खुद बहुत दिलचस्प लगता था।

इसलिए, जब मुझे विश्वव्यापी आंदोलन के साथ एक अनुभव हुआ, तो यह एक दिलचस्प और, मुझे लगता है, काफी ज्ञानवर्धक अनुभव था। लेकिन विश्वव्यापी आंदोलन आम तौर पर इस तरह से नहीं चला है। हालाँकि, किसी चीज़ के संदर्भ में, एक धार्मिक विकास, विश्वव्यापीकरण को याद रखना महत्वपूर्ण है।

ठीक है, तो सबसे पहले, अस्तित्ववाद और दूसरा, सार्वभौमिकतावाद। मुझे आप लोगों को यहाँ एक ब्रेक लेने के लिए लगभग पाँच सेकंड का ब्रेक देना होगा। आप सभी के दिलों को आशीर्वाद दें।

बस यहीं रुक जाओ। आज हमारे पास सिर्फ़ एक ही धर्मत्यागी है। हम इसी बात पर खुश हैं।

यह अच्छी बात है। हम बुधवार को व्याख्यान देने जा रहे हैं। मैं सोमवार को बाल्टीमोर में हूँ।

अगले हफ़्ते छुट्टी। और फिर जब हम पहले दिन वापस आते हैं, जब हम पहले और तीसरे दिन वापस आते हैं, तो हम डिट्रिट्च बोनहोफ़र का एक वीडियो दिखाते हैं। यह एक बहुत अच्छा वीडियो है जिसका नाम है मेमोरीज़ एंड पर्सपेक्टिव्स।

मैं आपको एक छोटी सी स्टडी शीट दूंगा ताकि आपको पता चल जाए कि क्या लिखना है। और फिर, शुक्रवार को, यह फाइनल के लिए हमारा पहला समीक्षा सत्र है। इसलिए, बुधवार को जब हम वापस आएं, तो मैं आपसे पाठों के बारे में चार सवाल पूछूंगा।

तो, ऐसा करने की कोशिश करें। ये चार सवाल आपको शुक्रवार से आगे ले जाएंगे। फिर, अगले सोमवार को हम व्याख्यान देंगे।

फिर, बुधवार को, हम पाठों से एक साथ अपना अंतिम अध्ययन समय बिताएंगे। इसलिए यदि आप मुझे उस बुधवार को चार प्रश्न देते हैं, तो यह शुक्रवार और बुधवार दोनों को कवर करेगा। इसलिए, जब हम वापस आएं तो पाँच सत्र बचे होंगे।

यही तो है जो तुम्हें मिला है। तो जैसे ही हम शुक्रवार को व्याख्यान समाप्त करेंगे, मैं यहाँ से निकल जाऊँगा और बाल्टीमोर के लिए रवाना हो जाऊँगा। तो, मुझे आशा है कि आपका थैंक्सगिविंग बहुत बढ़िया रहेगा।

लेकिन मैं शुक्रवार को इस बारे में बात करूँगा। क्या आपने ठीक से आराम किया है ? और सब कुछ ठीक है।

आइए यहाँ सिर्फ़ ज़िक्र करें, सिर्फ़ ज़िक्र ही नहीं, बल्कि हमें डिट्रिच बोनहोफ़र के बारे में बात करने की ज़रूरत है। और मैं सिर्फ़ पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बातें बताने जा रहा हूँ। और सबसे महत्वपूर्ण बात है उनके धर्मशास्त्र के बारे में।

बोनहोफ़र उन लोगों में से एक थे जिन्होंने कार्ल बार्थ, उनके गुरु और बाकी सभी के साथ धर्मशास्त्र के लिए मंच तैयार करने में मदद की। तो, आइए बोनहोफ़र का उल्लेख करें। यहाँ उनकी तिथियाँ दी गई हैं, 1906, 1945।

और यहाँ डिट्रिच बोनहोफ़र की कुछ तस्वीरें हैं। यहाँ बोनहोफ़र की एक पुरानी तस्वीर है। यहाँ टेगेल जेल में बोनहोफ़र की ली गई आखिरी तस्वीर है।

मेरे दफ़्तर में मेरी मेज़ पर वह तस्वीर टंगी हुई है। तो, मैं जल्दी से उसकी पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बता दूँ। और फिर हम उसके धर्मशास्त्र पर आगे बढ़ेंगे।

हम पृष्ठभूमि, यादें और दृष्टिकोण देखने जा रहे हैं। इसलिए, हम यहाँ ज़्यादा कुछ नहीं कहेंगे। यहाँ सिर्फ़ इतना कहना है कि डिट्रिच बोनहोफ़र, 1906 में जर्मनी में पैदा हुए, डिट्रिच बोनहोफ़र का जन्म, जैसा कि आप टेप और वीडियो में देखेंगे, एक बहुत ही अमीर, संपन्न, स्थापित जर्मन परिवार में हुआ था।

और यह उनके जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि उन्होंने एक विशेषाधिकार प्राप्त जीवन जिया। उनके पिता उस समय जर्मनी के सबसे प्रसिद्ध मनोचिकित्सकों में से एक थे और इसी तरह।

इसलिए उन्होंने बहुत ही विशेषाधिकार प्राप्त जीवन जिया। और फिर हिटलर का उदय हुआ। और बोनहोफ़र, क्योंकि उनके पास विश्वविद्यालय से शिक्षा थी, एक भूमिगत चर्च के नेता थे जिसे कन्फेसिंग चर्च कहा जाता था, या मैं कहूँ तो नेताओं में से एक थे।

और भी लोग थे। बोनहोफ़र कन्फेसिंग चर्च के नेताओं में से एक थे क्योंकि हिटलर ने लूथरन चर्च को नाजी बना दिया था। लूथरन चर्च ने हिटलर के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी।

और इसलिए जर्मनी में ऐसे पादरी थे जो खुद को कन्फेसिंग पास्टर कहते थे, और उन्होंने हिटलर या किसी अधिनायकवादी के प्रति निष्ठा की शपथ लेने से इनकार कर दिया। हमने पहले ही यहाँ बारमेन घोषणा का उल्लेख किया है। खैर, डिट्रिच बोनहोफ़र उस आंदोलन में एक नेता बन गए।

हमें यह भी बताना चाहिए कि उनकी पृष्ठभूमि के कारण, और आप इसे सोमवार को फिर से देखेंगे, हमें यह भी बताना चाहिए कि वह एक पादरी थे, वह एक धर्मशास्त्री थे, और वह शांतिवाद के बारे में काफी आश्वस्त थे। आप इसे टेप में देखेंगे। काफी आश्वस्त शांतिवादी।

अब, मैं यह नहीं कहूँगा कि वह एक कार्ड-ले जाने वाला शांतिवादी था, लेकिन वह इस बात से पूरी तरह आश्वस्त था कि 20वीं सदी में ईसाई धर्म के लिए आगे का रास्ता शांतिवाद था। यह दिलचस्प है कि एक पादरी, एक धर्मशास्त्री और एक शांतिवादी के रूप में, वह हिटलर की हत्या

की साजिश में शामिल हो गया। और आपको आश्चर्य होता है कि एक पादरी, एक धर्मशास्त्री और एक शांतिवादी हिटलर की हत्या की साजिश में कैसे शामिल हो सकता है।

और, ज़ाहिर है, इसका कारण यह है कि वह अंततः अपने जीवन में उस मुकाम पर पहुँच गया जहाँ उसे एहसास हुआ कि नाज़ी शासन ईश्वर द्वारा नियुक्त सरकार नहीं थी। इसने अपनी सीमाओं को पार कर लिया था कि एक सरकार को क्या करना चाहिए। इसलिए यह अब वैध सरकार नहीं थी।

और उसे लगा कि अगर हमें पश्चिमी सभ्यता को बचाना है तो हमें हिटलर को हराना होगा। और इसलिए वह हिटलर की हत्या की साजिश में शामिल हो गया, जिसके लिए उसे गिरफ्तार किया गया और दो अलग-अलग जगहों पर कैद किया गया। और फिर यह पहली जगह है, टेगेल जेल।

या नहीं, यह दूसरी जगहों में से एक है, टेगेल जेल। लेकिन वैसे भी, उसे गिरफ्तार कर जेल ले जाया गया। और फिर, 9 अप्रैल 1945 को, बोनहोफ़र को गेस्टापो द्वारा फांसी पर लटका दिया गया।

इसलिए उन्होंने बहुत ही मुश्किल समय बिताया, डिट्रिच बोनहोफ़र के लिए अंत बहुत मुश्किल था क्योंकि उन्हें फांसी पर लटका दिया गया था, ज़ाहिर है। अपने जीवन के मध्य में, वह लूथरन के रूप में बड़े हुए। और वह इस मायने में एक अच्छे लूथरन थे कि घर पर भक्ति होती थी और इसी तरह की अन्य चीजें भी।

लेकिन वह विशेष रूप से चर्च जाने वाला परिवार नहीं था। लेकिन अपने जीवन के शुरुआती दौर में, अपनी किशोरावस्था में, बोनहोफ़र ने अपनी माँ के साथ मिलकर तय किया कि वे नियमित रूप से चर्च जाना शुरू करेंगे, और उन्होंने ऐसा किया भी। स्थानीय लूथरन चर्च में नियमित रूप से जाना शुरू किया।

और फिर उसने तय किया कि वह धर्मशास्त्र का अध्ययन करना चाहता है। और यह उसके लिए बिल्कुल अलग रास्ता था, जो परिवार चाहता था कि वह करे। क्योंकि परिवार में हर कोई चिकित्सा या कानून में गया था, लेकिन धर्मशास्त्र, आप जानते हैं, और उसने तय किया कि वह धर्मशास्त्र का अध्ययन करना चाहता है।

और इस तरह वे 20वीं सदी के महान धर्मशास्त्रियों में से एक बन गए, हालाँकि जब उनकी मृत्यु हुई तब वे बहुत कम उम्र के थे। बेशक, उनके गुरुओं में से एक कार्ल बार्थ थे। तो यह डिट्रिच बोनहोफ़र की पृष्ठभूमि के बारे में कुछ जानकारी है।

हम इसे मेमोरीज एंड पर्सपेक्टिव्स में कुछ दिनों में देखेंगे। वीडियो को दिखाने में लगभग दो क्लास पीरियड लगते हैं। और जब हम वीडियो देखेंगे तो मैं उनके जीवन के कुछ संदर्भ दूंगा और आपको बस कुछ नोट्स लिख लेने के लिए दूंगा।

लेकिन चलिए नंबर दो पर चलते हैं, उनके धर्मशास्त्र पर। डिट्रिच बोनहोफर के धर्मशास्त्र के बारे में क्या? तो, ठीक है, मैं उनके धर्मशास्त्र के संदर्भ में पाँच बातें बताने जा रहा हूँ। नंबर एक, हम उनके चर्च-विज्ञान से शुरू करेंगे।

हम चर्च के बारे में उनके सिद्धांत से शुरुआत करेंगे। डिट्रिच बोनहोफर के लिए चर्च का सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने जो सबसे पहली बातें लिखीं, उनमें से एक चर्च के सिद्धांत पर थी।

मूलतः, उन्होंने चर्च का विश्लेषण न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से किया, बल्कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी किया। और यहाँ उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किए हैं, उनमें से एक यह है कि आपको समुदाय में चर्च के महत्व को देखना होगा। चर्च एक समुदाय है।

इसलिए, जब वह समुदाय शब्द का उपयोग करते हैं तो यह लगभग एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण है। लेकिन चर्च, एक अर्थ में, वह समुदाय है जो व्यक्ति के ऊपर खड़ा है। क्योंकि 20वीं सदी के मध्य में जब वह यह सब विश्लेषण कर रहे थे तो उन्होंने क्या देखा? पश्चिमी यूरोप में, उन्होंने एक बहुत ही व्यक्तिगत प्रकार का जीवन देखा।

वह चाहते थे कि लोग चर्च को सिर्फ एक साथ आने वाले व्यक्तियों के समूह के रूप में न समझें, बल्कि एक दूसरे की देखभाल करने वाले लोगों के समुदाय के रूप में समझें। ठीक है, और आप मेरी बात जानते हैं क्योंकि मैंने इसे कई कक्षाओं में कहा है। ईसाई धर्म एक बहुत ही व्यक्तिगत धर्म है, लेकिन यह कभी भी निजी धर्म नहीं है।

और डिट्रिच बोनहोफर हमें इसकी याद दिलाते हैं। ईसाई धर्म बहुत व्यक्तिगत है, लेकिन यह कभी निजी नहीं होता। यह सिर्फ यीशु और मैं ही नहीं हैं जो अपने कमरे में अपनी बाइबल के साथ बैठे हैं, अपनी बाइबल को पलट रहे हैं, यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि भगवान मेरे जीवन में क्या चाहते हैं।

ऐसा करना ठीक है, लेकिन आपको यह सारी समझ मसीह के शरीर, चर्च और समुदाय तक पहुंचानी होगी। इसलिए, समुदाय बहुत महत्वपूर्ण था। ठीक है, चर्च का वचन से संबंध।

डिट्रिच बोनहोफर ने चर्च के बारे में कहा कि चर्च में होना ईश्वर के वचन में होना है। और ईश्वर के वचन में होना चर्च में होना है। ये दोनों बातें एक दूसरे से अविभाज्य हैं।

आप एक के बिना दूसरे को नहीं पा सकते। और इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। साथ ही, दुनिया, चर्च और दुनिया के संदर्भ में, चर्च को कभी भी दुनिया से अलग एक मठवासी समुदाय नहीं होना चाहिए।

चर्च को दुनिया के भीतर और दुनिया के दुखों में जिम्मेदार कार्रवाई करने के लिए बुलाया जाता है। अब, यह एक सबक है जिसे हम टेप में देखेंगे। यह एक सबक है जो डिट्रिच बोनहोफर ने सीखा था जब वह अमेरिका में अध्ययन करने के लिए आया था।

जब वे अमेरिका में अध्ययन करने आए, तो उनके एक मित्र का नाम फ्रैंकलिन फिशर था। वे हार्लेम के एक अश्वेत ईसाई थे। वे बोनहोफर को हार्लेम में अपने अश्वेत चर्च, एबिसिनियन बैपटिस्ट चर्च में ले गए, और उन्होंने अमेरिका में अश्वेत समुदाय की पीड़ाओं के बारे में बहुत कुछ सीखा।

उसने खुद से पूछना शुरू किया कि क्या चर्च को उन दुखों के बारे में पता होना चाहिए। चर्च उस पीड़ित दुनिया से कैसे अलग रह सकता है? और फिर जब वह उस समय के बाद यूरोप वापस गया, और नाज़ी सत्ता में आए, तो उसने खुद से पूछा, मेरी दुनिया में पीड़ित लोग कौन हैं? वे यहूदी हैं। यहूदी ही वे लोग हैं जो पीड़ित हैं।

चर्च यहूदी समुदाय से अलग कैसे रह सकता है? चर्च को यहूदी समुदाय के साथ मिलकर कष्ट सहना चाहिए। चर्च को उसका हिस्सा होना चाहिए। इसलिए दुनिया में चर्च बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है।

ठीक है, और फिर चर्च के सदस्यों के रूप में, कलीसिया विज्ञान, हम चर्च के सदस्य हैं। हम चर्च के सदस्यों के रूप में कैसे जीते हैं? आपके पास दो विकल्प हैं। आप सस्ते अनुग्रह का जीवन जी सकते हैं, और सस्ता अनुग्रह सिर्फ चर्च जाना और कोई बलिदान न करना और यीशु को शायद एक अच्छे इंसान के रूप में देखना होगा, और, आप जानते हैं, चर्च आपके लिए ज़्यादा मायने नहीं रखता। यह सस्ता अनुग्रह है।

इसलिए, अगर आप चाहें तो सस्ते अनुग्रह का जीवन जी सकते हैं, लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं तो खुद को ईसाई मत कहिए। या फिर आप महंगे अनुग्रह का जीवन जी सकते हैं, और महंगा अनुग्रह है परमेश्वर के वचन को गंभीरता से लेना और अपने जीवन पर मसीह की सभी माँगों को गंभीरता से लेना, शिष्यत्व। यह महंगा अनुग्रह है।

तो, आपके पास अपनी पसंद है। क्या यह सस्ता अनुग्रह है या महंगा अनुग्रह? यहाँ उनकी पुस्तक है जिसका नाम है द कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप। जबकि मैं इसके बारे में बात कर रहा हूँ, वास्तव में जल्दी से, आप में से कितने लोगों ने द कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप पढ़ी है? चलो एक, दो, तीन, चार के हाथ पकड़ते हैं। ठीक है, ठीक है।

गर्मियों में पढ़ने के लिए सूची। इसे अभी लिख लें। शिष्यत्व की कीमत।

ईसाई साहित्य के संदर्भ में इसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए। यह महानतम में से एक है, आप जानते हैं। खैर, उन्होंने शिष्यत्व की कीमत कैसे शुरू की? सस्ता अनुग्रह हमारे चर्च का घातक दुश्मन है।

हम आज महंगे अनुग्रह के लिए लड़ रहे हैं। इसलिए सस्ता अनुग्रह हमारे चर्च का घातक दुश्मन है। हम आज महंगे अनुग्रह के लिए लड़ रहे हैं।

तो, कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप के पहले वाक्य में ही, वह युद्ध की पुकार लगाता है, आप जानते हैं। हम यहाँ किसके लिए लड़ रहे हैं? यही वह जानना चाहता है। इसलिए, डिट्रिच बोनहोफर के

लिए चर्च का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है, एक समुदाय के रूप में चर्च, और हमें एक समुदाय के रूप में कैसे कार्य करना चाहिए।

हमारे पास धर्मशास्त्र के संदर्भ में बोनहोफर के लिए कुछ अन्य चीजें हैं, और हमारे पास दो दिन और हैं। तो, मैं यहाँ बिल्कुल सही लक्ष्य पर हूँ, इसलिए हम ठीक काम कर रहे हैं। ठीक है, आपका दिन शुभ हो।

शुक्रवार को मिलते हैं। हम शुक्रवार को व्याख्यान देंगे। हम शुक्रवार को आपके पैर पकड़ेंगे, और फिर आपके पास थैंक्सगिविंग की छुट्टी का पूरा सप्ताह होगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह अस्तित्ववाद पर सत्र 25 है।